POLITICAL SCIENCE Dep.
B.A. Part-I, Paper-II

Dr. Husna Ara
Asst. Professor
Dr. L.K.V.D. College Tajpur.
Samastipur

5. अरि-मित्र राज्य –

अरि मित्र राज्य वह राज्य है जो विजिगीषु से शत्रुता रखने वाले पड़ोसी राज्यों के मित्र हों तथा जो विजिगीषु के खिलाफ अरि राज्य की सहायता करने की प्रवृत्ति रखता हो।

6. मित्र-मित्र राज्य –

अरि-मित्र के सामने अवस्थित राज्य अरि की अपेक्षा मित्र राज्य का मित्र होता है मित्र-मित्र कहलाता है। क्योंकि वह मित्र राज्य का मित्र होता है इसलिए उसकी मित्रता विजिगीषु के साथ भी रहती है।

7. अरि-मित्र राज्य –

मित्र-मित्र राज्य के सामने अवस्थित राज्य मित्र-मित्र राज्य कहलाता है क्योंकि वह अरि-मित्र राज्य का मित्र होता है इसलिए अरि राज्य के साथ उसका सम्बंध मैत्रीपूर्ण होता है।

8. पार्ष्णिग्राह –

विजिगीषु के पीछे जो राज्य अवस्थित होता है वह पार्ष्णिग्राह कहलाता है। अरि राज्य की तरह वह भी विजिगीषु के साथ शत्रु राज्य की तरह होता है।

Scanned with CamScanner

9. आक्रंद -

पार्ष्णिग्राह के पीछे जो राज्य अवस्थित होता है वह आक्रंद राज्य कहलाता है। मित्र राज्य की तरह वह भी विजिगीषु के साथ मित्र की तरह होता है।

10. पार्ष्णिग्राहासार -

कौटिल्य के अनुसार पार्ष्णिग्राहासार वह राज्य है जो विजिगीषु के स्थित पीछे पार्ष्णिग्राह का मित्र होता है।

11. मध्यम -

मध्यम ऐसा राज्य है जिसका प्रदेश विजिगीषु तथा अरि राज्य दोनों की सीमा से लगा हुआ हो। मध्यम दोनों से चाहे वह मित्र हो या शत्रु, सहायता करने में समर्थ होता है।

12. उदासीन -

उदासीन राज्य का प्रदेश विजिगीषु, अरि तथा मध्यम इन तीनों की सीमाओं से परे होता है। युद्ध के समय यह तटस्थ राज्य होता है।

अतः कौटिल्य के मंडल से तत्कालीन समय में दूसरे राज्यों के साथ संबंधों को समझा जा सकता है। मंडल सिद्धांत के तहत सम्राट का नेता सम्पूर्ण मंडल पर सर्वोच्चता स्थापित करने का प्रयास करता है।

Dr. Jahanara Ara
Asst. Professor.

Scanned with CamScanner